पैसा दो, तेल कुएं नहीं खोदेंगे

जलवायु परिवर्तन के संकट के विचित्र परिणाम सामने आ रहे हैं। अब लगभग इस बात पर आम सहमति है कि धरती का औसत तापमान बढ़ रहा है और इसके लिए मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैसें ज़िम्मेदार हैं। यह भी सब स्वीकार करते हैं कि ग्रीनहाउस गैसों की वृद्धि में मानवीय क्रियाकलापों की ही सबसे बड़ी भूमिका है। सवाल है कि इसके लिए क्या किया जाए। इस संदर्भ में एक विचित्र-सा सुझाव इक्वेडोर ने रखा है। सुझाव की अपेक्षा इसे मांग कहना अधिक उपयुक्त होगा।

इक्वेडोर फिलहाल अपने इलाके के अमेज़न वर्षा वनों में तेल के कुएं खोद रहा है ताकि अपनी आमदनी बढ़ा सके। ये तेल कुएं वह अमेज़न में यासुनी राष्ट्रीय उद्यान में खोद रहा है, जिसे अमेज़न का सबसे अनछुआ जंगल माना जाता है। इक्वेडोर को उम्मीद है कि यहां से तेल निकालकर वह 14 अरब डॉलर कमा सकेगा। अमेज़न का यह जंगल एक प्रमुख इकोसिस्टम है जो कार्बन डाईऑक्साइड को सोखता है। दूसरे शब्दों में यह एक कार्बन सिन्क है।

इक्वेडोर ने दुनिया के विकसित राष्ट्रों से मांग की है कि यदि वे उसे इसका आधा यानी 7 अरब डॉलर भुगतान करें तो वह ये तेल कुएं नहीं खोदने पर विचार कर सकता है। यह मांग उसने करीब दो वर्ष पहले की थी। कई इकॉलॉजीविद मानते हैं कि यह एक अच्छा विचार है। जैसे सेव अमेरिकाज़ फॉरेस्ट नामक पर्यावरण समूह के मेट फाइनर का मत है कि यह एक सकारात्मक बात है कि कम से कम इक्वेडोर 'खोदो, खोदो, खोदो' की मानसिकता से तो बाहर आया है।

वैसे अभी तक किसी भी देश ने इक्वेडोर की पेशकश को स्वीकार नहीं किया है मगर धीरे-धीरे इस पर गंभीरता से विचार तो होने लगा है। जैसे फाइनर को लगता है कि संभवतः जर्मनी इसमें से 20 प्रतिशत का भुगतान करने को तैयार हो जाएगा।

उम्मीद है कि इस माह राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम द्वारा एक कोश की घोषणा की जाएगी जिसमें विभिन्न देशों के योगदान को जमा किया जाएगा और इक्वेडोर को उस राशि के ब्याज का भुगतान करने की व्यवस्था होगी। ऐसा माना जा रहा है कि इस तरह की व्यवस्था होने पर इक्वेडोर की भावी सरकार के लिए तेल कुएं न खोदने का एक प्रलोभन रहेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 63 का हल

वें	क	ट	रा	म	न			अ
	च		ख		क्ष	ति	ग्र	स्त
प	रा	ग		इ	त्र		स	
त				स		सु	नी	ता
वा			ह	ब	ल			प
र	ता	लू		गो				मा
	सी		से	ल		सा	व	न
स	र	ग	म		प्रा		य	
म			ल	व	ण	भा	स्क	र